छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

पंचम विधान सभा **द्वादश सत्र**

सोमवार, दिनांक 13 दिसम्बर, 2021

(अग्रहायण 22, शक सम्वत् 1943)

[अंक 01]

Web Copy

विधान सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष	डॉ. चरणदास महंत
उपाध्यक्ष	श्री मनोज सिंह मण्डावी
प्रमुख सचिव	श्री चन्द्र शेखर गंगराड़े

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय राज्यपाल

सुश्री अनुसुईया उइके

मंत्रिमण्डल के सदस्यों की सूची

01.	श्री भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री	सामान्य प्रशासन, वित्त, ऊर्जा, खनिज साधन, जन सम्पर्क, इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी एवं अन्य विभाग जो किसी मंत्री को आवंटित ना हो.
02.	श्री टी.एस. सिंहदेव, मंत्री	पंचायत एवं ग्रामीण विकास, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा, 20 सूत्रीय कार्यान्वयन, वाणिज्यिक कर (जी.एस.टी.)
03.	श्री ताम्रध्वज साहू, मंत्री	लोक निर्माण, गृह, जेल, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व, पर्यटन
04.	श्री रविन्द्र चौबे, मंत्री	संसदीय कार्य, कृषि विकास एवं किसान कल्याण तथा जैव प्रौद्योगिकी, पशुधन विकास, मछली पालन, जल संसाधन एवं आयाकट
05.	डॉ.प्रेमसाय सिंह टेकाम, मंत्री	स्कूल शिक्षा, आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास, सहकारिता
06.	श्री मोहम्मद अकबर, मंत्री	परिवहन, आवास एवं पर्यावरण, वन, विधि एवं विधायी कार्य
07.	श्री कवासी लखमा, मंत्री	वाणिज्यिक कर (आबकारी), वाणिज्य एवं उद्योग
08.	डॉ.शिवकुमार डहरिया, मंत्री	नगरीय प्रशासन एवं विकास, श्रम
09.	श्री अमरजीत भगत, मंत्री	खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण, योजना आर्थिक एवं सांख्यिकी, संस्कृति
10.	श्रीमती अनिला भेंडिया, मंत्री	महिला एवं बाल विकास एवं समाज कल्याण
11.	श्री जयसिंह अग्रवाल, मंत्री	राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास,वाणिज्यिक कर (पंजीयन एवं मुद्रांक)
12.	श्री गुरू रूद्र कुमार, मंत्री	लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी एवं ग्रामोद्योग
13.	श्री उमेश पटेल, मंत्री	उच्च शिक्षा, कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

संसदीय सचिवों की सूची

01.	श्री चिंतामणी महाराज	लोक निर्माण मंत्री से संबद्ध
02.	श्री पारसनाथ राजवाड़े	उच्च शिक्षा मंत्री से संबद्ध
03.	श्रीमती अंबिका सिंहदेव	लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री से संबद्ध
04.	श्री चन्द्रदेव प्रसाद राय	वन मंत्री से संबद्ध
05.	श्री द्वारिकाधीश यादव	आदिम जाति विकास मंत्री से संबद्ध
06.	श्री गुरुदयाल सिंह बंजारे	पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री से संबद्ध
07.	श्री इन्द्रशाह मण्डावी	राजस्व मंत्री से संबद्ध
08.	श्री कुंवर सिंह निषाद	खाद्य मंत्री से संबद्ध
09.	डॉ. (श्रीमती) रश्मि आशिष सिंह	महिला एवं बाल विकास मंत्री से संबद्ध
10.	श्री रेखचंद जैन	नगरीय प्रशासन मंत्री से संबद्ध
11.	सुश्री शकुन्तला साहू	कृषि मंत्री से संबद्ध
12.	श्री शिशुपाल सोरी	वन मंत्री से संबद्ध
13.	श्री यू.डी. मिंज	वाणिज्यिक कर (आबकारी) मंत्री से संबद्ध
14.	श्री विकास उपाध्याय	लोक निर्माण मंत्री से संबद्ध
15.	श्री विनोद सेवनलाल चन्द्राकर	पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री से संबद्ध

.

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सदस्यों की वर्णात्मक सूची
(निर्वाचन क्षेत्र का नाम तथा क्रमांक सहित)

अ

01.	अजय चन्द्राकर	57-कुरूद
02.	अमरजीत भगत	11-सीतापुर (अ.ज.जा.)
03.	अरूण वोरा	64-दुर्ग शहर
04.	अनिता योगेंद्र शर्मा, श्रीमती	47-धरसींवा
05.	अनिला भेंडिया, श्रीमती	60-डौंडी लोहारा (अ.ज.जा.)
06.	अंबिका सिंहदेव, श्रीमती	03-बैकुंठपुर
07.	अमितेश शुक्ल	54-राजिम
08.	अनूप नाग	79-अंतागढ़ (अ.ज.जा.)
09.	आशीष कुमार छाबड़ा	69-बेमेतरा

इ

01.	इंद्रशाह मण्डावी	78-मोहला-मानपुर (अ.ज.जा.)
02.	इंदू बंजारे, श्रीमती	38-पामगढ़ (अ.जा.)

उ

01.	उत्तरी गनपत जांगड़े, श्रीमती	17-सारंगढ़ (अ.जा.)
02.	उमेश पटेल	18-खरसिया

क

01.	कवासी लखमा	90-कोन्टा (अ.ज.जा.)
02.	कृष्णमूर्ति बांधी, डॉ.	32-मस्तूरी (अ.जा.)
03.	किस्मत लाल नंद	39-सरायपाली (अ.जा.)
04.	कुलदीप जुनेजा	50-रायपुर नगर उत्तर
05.	कुंवर सिंह निषाद	61-गुण्डरदेही
06.	के.के.ध्रुव, डॉ.	24-मरवाही (अ.ज.जा.)
07.	केशव प्रसाद चन्द्रा	37-जैजेपुर

ख

01	खेलसाय सिंह	04-प्रेमनगर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ग

01.	गुरू रूद्र कुमार	67-अहिवारा (अ.जा.)
02.	गुरूदयाल सिंह बंजारे	70-नवागढ़ (अ.जा.)
03.	गुलाब कमरो	01-भरतपुर-सोनहत (अ.ज.जा.)

च

01.	चक्रधर सिंह सिदार	15-लैलूंगा (अ.ज.जा.)
02.	चरणदास महंत, डॉ.	35-सक्ती
03.	चंदन कश्यप	84-नारायणपुर (अ.ज.जा.)
04.	चंद्रदेव प्रसाद राय	43-बिलाईगढ़ (अ.जा.)
05.	चिन्तामणी महाराज	08-सामरी (अ.ज.जा.)

छ

01.	छन्नी चंदू साहू, श्रीमती	77-खुज्जी

ज

01.	जयसिंह अग्रवाल	21-कोरबा

ट

01.	टी.एस.सिंहदेव	10-अम्बिकापुर

ड

01.	डमरूधर पुजारी	55-बिन्द्रानवागढ़ (अ.ज.जा.)

त

01.	ताम्रध्वज साहू	63-दुर्ग ग्रामीण

द

01.	दलेश्वर साहू	76-डोंगरगांव
02.	द्वारिकाधीश यादव	41-खल्लारी
03.	देवती कर्मा	88-दंतेवाड़ा (अ.ज.जा.)
04.	देवेंद्र यादव	65-भिलाई नगर
05.	देवेंद्र बहादुर सिंह	40-बसना

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ध

01.	धरमलाल कौशिक	29-बिल्हा
02.	धनेन्द्र साहू	53-अभनपुर
03.	धर्मजीत सिंह	26-लोरमी

न

01.	ननकीराम कंवर	20-रामपुर (अ.ज.जा.)
02.	नारायण चंदेल	34-जांजगीर-चांपा

प

01.	प्रकाश शक्राजीत नायक	16-रायगढ़
02.	प्रमोद कुमार शर्मा	45-बलौदाबाजार
03.	पारसनाथ राजवाड़े	05- भटगांव
04.	प्रीतम राम, डा.	09-लुण्ड्रा (अ.ज.जा.)
05.	पुन्नूलाल मोहले	27-मुंगेली (अ.जा.)
06.	पुरूषोत्तम कंवर	22-कटघोरा
07.	प्रेमसाय सिंह टेकाम, डॉ.	06-प्रतापपुर (अ.ज.जा.)

ब

01.	बृजमोहन अग्रवाल	51-रायपुर नगर(दक्षिण)
02.	बृहस्पत सिंह	07-रामानुजगंज (अ.ज.जा.)

भ

01.	भुनेश्वर शोभाराम बघेल	74-डोंगरगढ़ (अ.जा.)
02.	भूपेश बघेल	62-पाटन

म

01.	ममता चंद्राकर, श्रीमती	71-पण्डरिया
02.	मनोज सिंह मण्डावी	80-भानुप्रतापपुर (अ.ज.जा.)
03.	मोहन मरकाम	83-कोण्डागांव (अ.ज.जा.)
04.	मोहित राम	23-पाली-तानाखार(अ.ज.जा.)
05.	मोहम्मद अकबर	72-कवर्धा

य

01.	यू.डी.मिंज	13-कुनकुरी (अ.ज.जा.)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

र

01.	रजनीश कुमार सिंह	31-बेलतरा
02.	रंजना डीपेंद्र साहू, श्रीमती	58-धमतरी
03.	राजमन वेंजाम	87-चित्रकोट (अ.ज.जा.)
04.	रमन सिंह, डॉ.	75-राजनांदगांव
05.	रामकुमार यादव	36-चंद्रपुर
06.	रामपुकार सिंह ठाकुर	14-पत्थलगांव (अ.ज.जा.)
07.	रविन्द्र चौबे	68-साजा
08.	रश्मि आशिष सिंह, डॉ. (श्रीमती)	28-तखतपुर
09.	रेखचंद जैन	86-जगदलपुर
10.	रेणु अजीत जोगी, डॉ. (श्रीमती)	25-कोटा

ल

01.	लक्ष्मी ध्रुव, डॉ.	56-सिहावा (अ.ज.जा.)
02.	लखेश्वर बघेल	85-बस्तर (अ.ज.जा.)
03.	लालजीत सिंह राठिया	19-धरमजयगढ़ (अ.ज.जा.)

व

01.	विक्रम मण्डावी	89-बीजापुर (अ.ज.जा.)
02.	विनय जायसवाल, डॉ.	02-मनेन्द्रगढ़
03.	विनय कुमार भगत	12-जशपुर (अ.ज.जा.)
04.	विद्यारतन भसीन	66-वैशाली नगर
05.	विकास उपाध्याय	49-रायपुर नगर पश्चिम
06.	विनोद सेवन लाल चंद्राकर	42-महासमुन्द

श

01.	शकुन्तला साहू, सुश्री	44-कसडोल
02.	शिवरतन शर्मा	46-भाटापारा
03.	शिवकुमार डहरिया, डॉ.	52-आरंग (अ.जा.)
04.	शिशुपाल सोरी	81-कांकेर (अ.ज.जा.)
05.	शैलेश पाण्डे	30-बिलासपुर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

स

01.	सत्यनारायण शर्मा	48-रायपुर ग्रामीण
02.	संतराम नेताम	82-केशकाल (अ.ज.जा.)
03.	संगीता सिन्हा, श्रीमती	59-संजारी बालोद
04.	सौरभ सिंह	33-अकलतरा

73-खैरागढ़	**रिक्त**

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

छत्तीसगढ़ विधान सभा

सोमवार, दिनांक 13 दिसम्बर, 2021

(अग्रहायण-22, शक संवत् 1943)

विधान सभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुई

(अध्यक्ष महोदय (डॉ. चरणदास महंत) पीठासीन हुए)

राष्ट्रगीत/राज्यगीत

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" के साथ राज्यगीत "अरपा पइरी के धार" होगा। माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे राष्ट्रगीत एवं राज्यगीत के लिये कृपया अपने स्थान पर खड़े हों ।

(राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" और राज्यगीत "अरपा पइरी के धार" का गायन किया गया।)

जन्मदिवस की बधाई
माननीय अध्यक्ष महोदय, डॉ. चरणदास महंत

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जन्मदिन के बधाई हो।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप शतायु हों ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूरे सदन की ओर से आपको जन्मदिवस की बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामना ।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद ।

श्री अमितेश शुक्ल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम सभी लोगों को सौ सालों तक आपका मार्गदर्शन मिलता रहे ।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद ।

श्री अमरजीत भगत :- अऊ जइसे-जइसे दिन आवत हे, आप अऊ जवान दिखत हओ। (हंसी) आपकी यह जवानी बरकरार रहे ।

अध्यक्ष महोदय :- आज मेरे जन्मदिवस के अवसर पर आप सभी ने मुझे जो शुभकामनाएं दी हैं, जो स्नेह दिया है, आशीर्वाद दिया है उसके लिये मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं और आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

समय :

11.03 बजे

निधन का उल्लेख

(1) श्री देवव्रत सिंह, सदस्य, छत्तीसगढ़ विधान सभा ।

(2) श्री गोंदिल प्रसाद अनुरागी, पूर्व सांसद, लोकसभा ।

(3) श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया, पूर्व राज्यमंत्री, छत्तीसगढ़ शासन।

(4) श्री युद्धवीर सिंह जूदेव, पूर्व संसदीय सचिव, छत्तीसगढ़ शासन ।

(5) श्री मूलचंद खण्डेलवाल, पूर्व राज्यमंत्री अविभाजित मध्यप्रदेश शासन ।

(6) श्री मनुराम कच्छ, पूर्व सदस्य, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा ।

(7) दिनांक 8 दिसम्बर, 2021 को वायुसेना के हेलीकॉप्टर दुर्घटना में दिवंगतों को श्रद्धांजलि ।

अध्यक्ष महोदय :- आज दुखद संयोग है । आज शीतकालीन सत्र भी प्रारंभ हो रहा है। मेरा जन्मदिन भी है और आज के दिन हमें सभी साथियों के निधन का उल्लेख भी करना है । ऐसे अवसर पर मन जरा विचलित हो जाता है और मैं समझता हूं कि आप सभी जानते हैं कि जन्म से मृत्यु तक का सफर ही हम सभी का जीवन है और जीवन में सुखद और दुखद अनुभूतियों का मिश्रण है । जीवन की इस नश्वरता को हमारे कबीर साहब ने कहा है कि -

पानी केरा बुदबुदा, अस मानस की जात ।
देखत ही छिप जायेगा, ज्यों सारा परभात ।

हमारे सभापति रहे, विधायक और सांसद रहे भाई देवव्रत का असामयिक निधन हम सभी के लिये अत्यंत ही दुखद और हृदयविदारक है । कुछ भूतपूर्व सदस्यों को भी हमें संवेदना प्रकट करनी है और सी.डी.एस. बिपिन रावत जी का निधन, उनके साथियों का निधन भी बहुत हृदयविदारक के साथ ही साथ पूरे देश के लिये चिंता का विषय है । परंतु आज सत्र के प्रथम दिवस और जो स्थापित परंपरा है, उसके अनुसार सभी दिवंगतों को हमें श्रद्धांजलि देनी है। एक शब्द के साथ जो कबीर साहब ने कहा है :-

क्या करिए क्या जोड़िए, थोड़े जीवन काज।
छांड़ि छांड़ि सब जात हैं, देह गेह धन राज।।

मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यंत दुख हो रहा है कि छत्तीसगढ़ की पंचम विधान सभा के सदस्य एवं लोकसभा के पूर्व सदस्य श्री देवव्रत सिंह का दिनांक 04 नवंबर, 2021, लोकसभा के पूर्व सदस्य एवं अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य श्री गोदिल प्रसाद अनुरागी का दिनांक 19 सितंबर, 2021, छत्तीसगढ़ शासन के पूर्व राज्यमंत्री, श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया का दिनांक 19 सितम्बर, 2021, छत्तीसगढ़ शासन के पूर्व संसदीय सचिव, श्री युद्धवीर सिंह जूदेव का दिनांक 20 सितंबर, 2021, अविभाजित मध्यप्रदेश शासन के पूर्व राज्यमंत्री, श्री मूलचंद खण्डेलवाल का दिनांक 15

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अक्टूबर, 2021, अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री मनुराम कच्छ का दिनांक 02 नवंबर, 2021, तथा दिनांक 08 दिसंबर, 2021 को तमिलनाडु के कुन्नूर के समीप वायुसेना के हेलीकॉप्टर दुर्घटना में देश के प्रथम चीफ ऑफ डिफेंस स्टॉफ श्री विपिन रावत, उनकी पत्नी एवं सेना के अन्य अधिकारियों एवं जवानों का निधन हो गया है।

श्री देवव्रत सिंह का जन्म 03 जून, 1969 को गुजरात के जामनगर में हुआ था। वे सन् 1995 एवं 1998 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की टिकट पर खैरागढ़ विधान सभा क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए। वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य गठन उपरांत छत्तीसगढ़ की प्रथम विधान सभा के सदस्य रहे। पश्चात् 2003 में पुन: छत्तीसगढ़ की द्वितीय विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए। वे 2003 में ही राजनांदगांव लोकसभा क्षेत्र से सांसद निर्वाचित हुए, लोकसभा सांसद के पद पर निर्वाचित होने पर उन्होंने विधान सभा से अपनी सदस्यता से त्यागपत्र दिया तथा छत्तीसगढ़ की वर्तमान पंचम विधान सभा के लिए चौथी बार वर्ष 2018 में खैरागढ़ विधान सभा क्षेत्र से जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जे) की टिकट पर विधायक निर्वाचित हुए। वे विधान सभा की विभिन्न समितियों के सभापति एवं सदस्य भी रहे। इस पंचम विधान सभा में उन्होंने सभापति तालिका के सदस्य के रूप में सभा की कार्यवाही के सुचारू संचालन में सहयोग दिया। वे बहुत ही सहज, सरल और सौम्य स्वभाव के थे। उनकी खेल, कृषि एवं संगीत में विशेष अभिरूचि थी। उनका दीर्घकालीन राजनीतिक जीवन अपने क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिये समर्पित रहा।

उनके निधन से प्रदेश ने एक सहज, सरल युवा एवं अनुभवी राजनेता तथा समाजसेवी को खो दिया है।

श्री गोदिल प्रसाद अनुरागी का जन्म 01 नवंबर, 1931 को हुआ था। उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की टिकट पर मस्तूरी निर्वाचन क्षेत्र से सन् 1967 तथा 1972 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए तथा सन् 1980 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की टिकट पर ही बिलासपुर निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। आपकी सामाजिक कार्यों में विशेष अभिरूचि थी। उनका दीर्घकालीन राजनीतिक जीवन अपने क्षेत्र के विकास एवं उन्नति के लिये समर्पित रहा।

उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनेता तथा समाजसेवी को खो दिया है।

श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया का जन्म 25 अक्टूबर, 1949 को नई दिल्ली में हुआ था। उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था। वे प्रारंभ से ही राजनीतिक कार्यों में सक्रिय रहे। वे 1993 एवं 1998 में भारतीय जनता पार्टी की टिकिट पर खुज्जी विधान सभा क्षेत्र से सदस्य रहे । सन् 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य गठन के उपरांत छत्तीसगढ़ की प्रथम विधान सभा के सदस्य रहे । 2003 में द्वीतीय विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और वाणिज्य उद्योग, सार्वजनिक उपक्रम, ग्रामोद्योग एवं परिवहन विभाग के

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार का दायित्व संभाला । उनकी समाज सेवा में विशेष रूचि थी । वे जनकल्याणकारी कार्यों तथा समाज सेवा के लिए सदैव समर्पित रहे । उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनेता को खो दिया है ।

श्री युद्धवीर सिंह जूदेव का जन्म 1 मार्च, 1982 को जशपुर में हुआ । उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था । वे सन् 2008 एवं 2013 में भारतीय जनता पार्टी की टिकिट पर विधान सभा क्षेत्र चन्द्रपुर से विधायक निर्वाचित हुए । उन्होंने संसदीय सचिव का दायित्व बखूबी निभाया । जूदेव जी अत्यंत सहज एवं सरल व्यवहार वाले राजनेता था। समाज कल्याण के साथ उनकी निशानेबाजी, घुड़सवारी, तीरंदाजी, तैराकी में विशेष अभिरूचि थी । उनका राजनीतिक जीवन पूरे क्षेत्र के विकास के लिए समर्पित रहा । उनके निधन से प्रदेश ने एक युवा राजनेता एवं समाज सेवी को खो दिया है ।

श्री मूलचंद जी खंडेलवाल का जन्म 25 सितम्बर 1937 को बिलासपुर में हुआ। वे सन् 1990 में भारतीय जनता पार्टी की टिकिट पर बिलासपुर से सदस्य चुने गए और उन्होंने मध्यप्रदेश शासन में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति राज्य मंत्री का दायित्व संभाला । उनका दीर्घकालीन राजनीतिक जीवन जनसेवा एवं अपने क्षेत्र के विकास के लिए सदैव समर्पित रहा । उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनेता तथा समाजसेवी को खो दिया है ।

श्री मनुराम जी कच्छ का जन्म 15 जून, 1957 को बस्तर के बड़े आरापुर में हुआ । उनका व्यवसाय मुख्य रूप से कृषि था । वे छात्र जीवन से ही सामाजिक, राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय थे । वे सन् 1993 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की टिकिट पर केशलूर से निर्वाचित हुए । उनके जनकल्याणकारी कार्यों एवं समाज सेवा के नाम से वे जाने जाते रहेंगे । उनके निधन से प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनेता एवं समाज सेवी को खो दिया है ।

यह सदन दिनांक 8 दिसम्बर, 2021 को तमिलनाडू के कुन्नुर के समीप वायुसेना के हेलीकॉप्टर दुर्घटना में देश के प्रथम चीफ़ ऑफ डिफेन्स स्टाफ विपिन रावत एवं उनकी धर्मपत्नी एवं सेना के अधिकारियों एवं जवानों की असामयिक मृत्यु पर गहन शोक व्यक्त करता है । ईश्वर से प्रार्थना करता है कि सभी दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करे एवं उनके परिवारजनों को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय देवव्रत जी खैरागढ़ राज परिवार के सदस्य थे और उनकी माताजी के निधन के बाद जो उप चुनाव हुआ, उसमें वे मध्यप्रदेश की विधान सभा में पहुंचे थे । वे बहुत ही कम उम्र में विधान सभा पहुंचे । वे मध्यप्रदेश ही नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की विधान सभा में भी लगातार सक्रिय रहे । जैसा कि आपने बताया कि खेलकूद एवं संगीत में उनकी अभिरूचि थी । विधान सभा में भी वे अपनी बात पूरी प्रखरता के साथ रखते थे और अनेक विषयों में उनका जबरदस्त दखल रहा है । वे अपनी बात बेबाकी से रखते थे। संगठन में भी उन्होंने

Uncorrected and unedited/Not for Publication

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

युवक कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में काम किया । उनके संगठन के कार्यों को भी हम लोगों ने देखा है, हमेशा सक्रिय और हसमुख व्यक्ति के रूप में हम उन्हें जानते हैं । वे उम्र में हमसे ज़रूर छोटे थे, विधान सभा में हम लोग 1993 में पहुंचे और वे 1995 में पहुंचे । केवल दो साल का ही अंतर रहा, लेकिन वे न केवल विधान सभा बल्कि लोक सभा में भी पहुंचे । वे खैरागढ़ के महल में न रहकर, उदयपुर के गांव में रहते थे और कृषि कार्यों में उनकी विशेष रूचि थी । हम उन्हें आधुनिक कृषक के रूप में भी जानते हैं । अचानक उनका देहावसान होना, हम सबको हतप्रभ कर गया कि 52 साल के उम्र में उनसे बिछड़ना होगा कभी हम लोगों ने सोचा नहीं था। उसके जाने से एक राजनेता, एक सामाजिक क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्ति, राजनीतिक क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्ति का देहावसान होना निश्चित रूप से इस प्रदेश के लिए नुकसानदायक है। राजनीतिक रूप से एक मझे हुए राजनीतिक की तरह वो काम करते रहे। कांग्रेस में भी रहे, जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़ (जे) के भी सदस्य के रूप में यहां विधानसभा में वे आए। उनके अल्पायु में ही जाने से निश्चित रूप से एक अपूरणीय क्षति हुई है, जिसका भरपाई नहीं किया जा सकता। स्वर्गीय श्री गोंदिल प्रसाद अनुरागी जी, जो वयोवृद्ध राजनेता के रूप में हम लोग जानते हैं। वे छठवें दशक में छत्तीसगढ़ के सावर्जनिक जीवन में आए। वे विधानसभा में आए, लोकसभा के सदस्य के रूप में रहें और जिस वर्ग से आते थे उसके उत्थान और विकास के लिए सतत प्रयास रहते थे, उनकी समस्याओं से वे लगातार जूझते रहते थे । एक अच्छी कलाकार के रूप में भी जानते रहस के बड़े कलाकार थे, लेकिन फिर भी उनकी जो सादगीपूर्ण जीवन है, वह हम सब के लिए मैं कह सकता हूँ कि एक असली छत्तीसगढ़िया जो कितने भी बड़े पद में रहे हो, लेकिन गुरूर नाम की कोई चीज नहीं थी। भरा पूरा परिवार वे छोड़ गये और 93 साल की उम्र में वे पूरा जीवन व्यतीत करके दुनिया से गये। मैं उनके प्रति भी श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं। श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया, हम लोगों के साथ विधानसभा में मध्यप्रदेश में भी, छत्तीसगढ़ में भी हम लोग साथ में थे। विधानसभा में उसकी सक्रियता प्रश्नकाल का बड़ा उपयोग करते थे। वे अपने क्षेत्र की समस्याओं को प्रश्न के रूप में विधानसभा में पूछते थे और ऐसा कोई दिन नहीं होता था जिसमें उनका तारांकित, अतारांकित प्रश्न न हो और उसकी उसी सक्रियता के कारण उनके क्षेत्र में जो विकास के कार्य कराने होते थे वह करा लेते थे। उनकी सक्रियता रही, मंत्री के रूप में भी उनका बड़ा योगदान रहा और बहुत ही हंसमुख और मिलनसार व्यक्ति के रूप में हम लोग हमेशा मिला करते थे। जब भी मिलते थे बड़े मुस्कुराकर मिलते थे और ऐसे व्यक्ति का जाना निश्चित रूप से एक अपूरणीय क्षति हुई है। मैं उनके प्रति भी श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं। श्री युद्धवीर सिंह जूदेव, बहुत ही कम उम्र में 39 साल की उम्र में इस दुनिया को छोड़कर गए। उभरते हुए राजनीतिज्ञ थे और जब भी उनसे मुलाकात होती थी, वे बहुत ही आदर-सम्मान के साथ मिलते थे। वे बड़े परिवार में जन्म लेने के बाद भी उसकी व्यवहार में बड़ी विनम्रता थी और ऐसे नौजवान के जाने से निश्चित रूप से इस प्रदेश को खासकर जशपुर को बड़ा नुकसान हुआ है। जिला पंचायत में भी रहे,

विधानसभा में भी रहे, संसदीय सचिव के रूप में उनका कार्य हमने देखा और वे बेबाकी से अपनी बात को कहते थे। दलों से ऊपर उठकर भी कई बार वे टिप्पणी करते थे, लेकिन वे अपनी मूल प्रवृत्ति जो उनकी सहजता थी, उससे वे कभी विचलित नहीं हुए। उनके जाने से निश्चित रूप से एक अपूरणीय क्षति हुई है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। श्री मूलचंद खण्डेलवाल जी, बहुत ही वरिष्ठ राजनीतिक और मंत्री के रूप में वे मध्यप्रदेश में कार्य किए। हम बिलासपुर जाते थे तो उनसे कई बार मुलाकात होती थी, वे बड़ा स्नेह वह देते थे, एक वरिष्ठ के नाते सामाजिक क्षेत्र में, राजनीति क्षेत्र में उनका योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। श्री मनुराम कच्छ जी भी हम लोगों के साथ बस्तर से चुनकर आए और हम लोगों के साथ विधायक रहे। वे बहुत ही सरल, सहज और मिलनसार व्यक्ति और जब भी हम लोग बस्तर, जगदलपुर जाते थे उनसे मुलाकात होती थी, लेकिन उनका भी इस प्रकार से चला जाना मतलब हम लोगों को यह विश्वास नहीं था कि मन्नु भाई हम लोगों से बिछड़ जाएंगे। कम उम्र में ही वे हमसे बिछड़े। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। आदरणी अध्यक्ष महोदय, दिनांक 08 सितंबर, 2021 को वायुसेना के हेलीकॉप्टर दुर्घटना की घटना है वह पूरे देश को झकझोर कर रख दिया, जिसमें CDS (Chief of defence staff) विपिन सिंह रावत सहित बड़े सेना के उच्च अधिकारी उस दुर्घटना में शहीद हुए और उनके जाने से निश्चित रूप से देश को एक अपूरणीय क्षति हुई है। वे एक अच्छे रणनीतिकार थे, अच्छे अधिकारी थे। सेना के जो जवान हैं, उनके बीच उनकी लोकप्रियता थी और ऐसे व्यक्ति का जाना निश्चित रूप से और उनके साथ-साथ और अधिकारियों का जाना निश्चित रूप से देश के लिए अपूर्णि क्षति है। मैं सभी दिवंगतों के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए उनके परिवार को दु:ख सहने की क्षमता ईश्वर प्रदान करे, यह कामना करता हूं।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो दिवंगत आत्मा हमारे बीच में नहीं हैं और जिनके जीवन का व्यक्तित्व और कृतित्व, चाहे वह राजनीति के क्षेत्र में हो, समाज सेवा के क्षेत्र में हो, निश्चित रूप से हम सब के लिए अपूर्णि क्षति है। प्रदेश के लिए अपूर्णि क्षति है और देवव्रत सिंह जी का राज परिवार में जन्म लेना, लेकिन जिस प्रकार से उनके जीवन का एक आम सामान्य लोगों की तरह जीवन व्यतीत करना बातचीत में, व्यवहार में कभी यह प्रकट नहीं हुआ कि राज परिवार से हैं। इतनी सहजता, सरलता, सौम्यता देवव्रत जी में हम सब लोगों ने देखा है। उनके साथ विधायक रहने का, काम करने का अवसर भी एक साथ प्राप्त हुआ है। विषयों में उनकी पकड़ रही है। अध्ययन करने वालों में देवव्रत सिंह जी का नाम है। क्योंकि विभिन्न जब विषय आये हैं उन विषयों के समय को अपनी बात को प्रस्तुत करना और केवल प्रस्तुत नहीं करना, बल्कि प्रभावी ढंग से विधानसभा के अंदर में रखना। वह लगातार विधायक चुने गये। तीन बार विधायक चुने जाने के बाद में फिर सांसद का चुनाव लड़ें, सांसद रहें। अभी वर्ष 2018 में फिर जनता कांग्रेस से विधायक के रूप में चुनकर के आये। सभापति तालिका में यहां आसंदी पर बैठकर के संचालन करने का उनको अवसर मिला और हम

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लोगों ने देखा है कि जिस प्रकार से उनकी लोकप्रियता रही है केवल राजनीति और सामाजिक क्षेत्र ही नहीं बल्कि जीवन के विभिन्न जो आयाम हैं, उनमें उनकी भागीदारी, सुनिश्चितता ऐसे व्यक्तित्व का अल्प समय में जाना इस सदन के लिए, समाज के लिए और परिवार के लिए अपूर्णि क्षति है। मैं इस अवसर पर उनको श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं कि ऐसे युवा का चले जाना निश्चित रूप से हम सब के लिए एक बड़ी क्षति है। श्री गोंदिल प्रसाद अनुरागी जी हमारे बिलासपुर, जिला-रतनपुर के निवासी थे। मस्तुरी क्षेत्र से विधायक रहें और विधायक रहने के बाद में हमारे बिलासपुर लोकसभा क्षेत्र से सांसद बनें। सांसद बनने के बाद भी जिस प्रकार से समाज में उनकी पकड़, समाज में लोकप्रियता, आम लोगों के बीच में रहना, रहन-सहन सभी को लेकर चलने वाला उनका एक निर्विवाद व्यक्तित्व रहा। वह सामाजिक पंचायतों में भी जाते थे और विशेष रूप से जो रतनपुरिया गम्मत उसमें उनकी जो रूचि, रासलीला का आयोजन। जब वह सांसद थे और कहीं पर रासलीला में जाएं तो अपने आपको रोक नहीं पाते थे। वह वहां पर भी जाकर के रासलीला में गायन और कीर्तन भजन के माध्यम से रासलीला का पूरा आनंद लेते थे। काफी दूर-दूर से उनको आमंत्रण भी दिया जाता था और लोग उनको लेकर भी जाते थे। इस नाम से उनकी एक प्रसिद्धि भी रही है। ऐसे व्यक्ति का चले जाना निश्चित रूप से एक राजनेता, समाजसेवी को हम सब लोगों ने खोया है। श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया जी के बारे में अभी आपने और माननीय मुख्यमंत्री जी बता रहे थे कि जिस क्षेत्र के वह निवासी हैं। मैं समझता हूं कि कुछ ही परिवार उनके हैं। लेकिन लगातर उस क्षेत्र से जीत कर के आना, यह उनकी लोकप्रियता है। वहां के विकास, वहां के लोगों के कार्य और सभी समाज को लेकर के साथ चलना । वे सन् 1993, 98 और 2003 के चुनाव में विजयी हुए और मध्यप्रदेश के बाद में छत्तीसगढ़ राज्य में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद में मंत्रिमण्डल में उनको काम करने का अवसर भी प्राप्त हुआ । उन्होंने वाणिज्य उद्योग, ग्रामोद्योग, परिवहन राज्य मंत्री, सार्वजनिक उपक्रम विभाग के मंत्री के रूप में दायित्वों का निवर्हन किया । हमेशा हंसमुख रहने वाले व्यक्ति थे । हम लोगों ने उनके क्षेत्र में देखा है कि उनके क्षेत्र में आम व्यक्ति के कार्यों को कैसे प्राथमिकता दी जाती है, किसानी की समस्या को कैसे सुलझाया जाता है, यह उनके लोकप्रियता रही है । रजिन्दरपाल सिंह भाटिया जी का ऐसे चले जाना पूरे प्रदेश के लिए, समाज के लिए क्षति है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, युद्धवीर जूदेव जी ने राजपरिवार में जन्म लिया। उनके पिताश्री कुमार दिलीप सिंह जूदेव जी के बारे में हम सबको मालूम है । जिस प्रकार से उनकी लोकप्रियता रही है और जो गुण उनके रहे हैं, उनके अनुरूप राजनीति के क्षेत्र में, समाज के क्षेत्र में युद्धवीर जी का राजनीति में प्रवेश कुमार दिलीप सिंह जी के उत्तराधिकारी के रूप में हुआ । वह जिला पंचायत सदस्य चुने गए, जिला पंचायत, जशपुर के उपाध्यक्ष रहे । वह चंद्रपुर विधान सभा क्षेत्र से दो बार चुनाव लड़े, दोनों बार जीतकर विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए । मुझे लगता है कि अगर वह जीवित होते तो लोगों को

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उनसे बहुत सारी अपेक्षाएं थीं, न केवल परिवार और समाज की अपेक्षाएं थीं, बल्कि सबकी उनसे अपेक्षाएं थीं । उन्होंने पार्टी के अनेक दायित्वों का भी निर्वहन किया है, पदाधिकारी रहे हैं, उनके रहने से काफी संभावनाएं थीं, युवा थे, लेकिन इतनी जल्दी चले जाएंगे, यह किसी को अहसास नहीं था । युवाओं के बीच में पूरे प्रदेश में उनकी लोकप्रियता थी, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र के साथ-साथ जो विभिन्न आयाम होते हैं, उसमें वह पारंगत रहे हैं-चाहे वह निशानेबाजी में हो, तिरंदाजी में हो, घुड़सवारी में हो, यह शौक उनमें बचपन से रहा है और उसमें वह पारंगत भी रहे हैं, उनकी रूचि भी रही हैं । वे ऐसे क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे, जहां पर वनवासी निवास करते हैं और उन वनवासियों से उनका अटूट रिश्ता था, जो एक सगे-संबंधी का रिश्ता होता है, वह रिश्ता उस परिवार का रहा है । जिस प्रकार से कुमार दिलीप सिंह जूदेव जी का रिश्ता था, उसी प्रकार से युद्धवीर सिंह जूदेव जी का भी रिश्ता उनसे रहा । उन्होंने अपने जीवन में इसको निर्वाह करने का प्रयास किया । निश्चित रूप से ऐसे युवा, राजनेता और समाजसेवी का जाना हम सबके लिए दुखद है और प्रदेश के लिए अपूरणीय क्षति है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मूलचंद खंडेलवाल जी हमारे बिलासपुर जिले के स्थायी निवासी थे । नीलकमल नामक होटल गोलबाजार, बिलासपुर में था और उसमें लिखा हुआ था कि मीठा खाओ, मीठा बोलो । वह एक ऐसा केन्द्र था, जहां सभी राजनीतिक दल के लोग बैठते थे । सेकण्ड हाफ में जब 3 बजे गप मारना है तो सब नीलकमल होटल में पहुंच जाते थे । वह होटल पूरे शहर की गतिविधियों का केन्द्र था। किसी भी प्रकार का समाचार मिलना है तो सभी राजनीतिक दल के लोग वहां पर बैठते थे, गपशप मारते थे और यह उसकी प्रसिद्धि रही है । मूलचंद जी ने भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में, जनसंघ के कार्यकर्ता के रूप में काम करना प्रारंभ किया । उसके बाद यह कहा जाता था कि बिलासपुर कांग्रेस का गढ़ है, ऐसे अभेद्य किले में पहली बार भारतीय जनता पार्टी की टिकिट पर मूलचंद जी विधायक निर्वाचित हुए और विधायक निर्वाचित होने के बाद वे मध्यप्रदेश में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति एवं उद्योग मंत्री के रूप में उन्हें काम करने का अवसर मिला । हम लोगों ने उनके कार्यकाल में प्रशासन में उनकी कसावट और दक्षता भी देखा है । उनकी काफी लोकप्रियता रही है । हम सब लोगों ने ऐसे व्यक्तित्व को खोया है । निश्चित रूप से हम सबके लिए और समाज के लिए वह अपूरणीय क्षति है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मनुराम कच्छ जी केशलूर से कांग्रेस के विधायक थे। इसके साथ ही कृषि, सामाजिक, वनवासी क्षेत्र में निवासरत लोगों के सुख-दु:ख में उनकी सहभागिता रही है। वे अपने क्षेत्र के प्रति जवाबदार रहते थे कि उनके क्षेत्र का कैसे विकास हो, उसमें उनका सतत् रूप से प्रयास रहा है। उनका जाना निश्चित रूप से हम सबके लिए अपूरणीय क्षति है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, तामिलनाडु के कुन्नूर की घटना है, जिसमें हम सब लोगों ने First Chief of Defence staff श्री बिपिन रावत, उनकी पत्नि और उनके सहयोगी-साथी ऐसे 13 लोगों को इस

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

घटना में कल्पना से बाहर दु:खद निधन हुआ है। वे किसी कार्यक्रम में जा रहे थे और जाते समय इस प्रकार की कोई घटना घट जाये तो मैं समझता हूं कि कोई सोचा भी नहीं होगा कि ऐसी घटना घटेगी। विपिन रावत जी के व्यक्तित्व के बारे में मैं जहां तक समझता हूं, उनकी प्रखरता रही है, उनकी दक्षता रही है। सेना के मनोबल को कैसे बढ़ाना है, मनोबल को कैसे ऊंचा रखना है, उनकी जो कार्यशैली है, वह न केवल भारत तक सीमित रही, बल्कि भारत के बाहर पड़ोसी देशों ने भी उसको देखा और परखा है। उनका विराट व्यक्तित्व था। एक सामान्य गांव में जन्म लेकर वे यहां तक पहुंचे थे। वैसे तो हम सब जानते हैं कि जब हम उत्तराखण्ड की बात करते हैं, तो लगभग परिवारों से सेना उनकी प्राथमिकता रहती है। उनके पिता जी भी सेना में रहे और उसी के अनुरूप वे एक गांव में जन्म लेकर उस पद पर पहुंचना और प्रखरता के साथ काम करना, एक मिसाल है। मैं समझता हूं कि उस दिन की घटना को लेकर हम सब लोगों को वेदना हुई है। दिल्ली की सड़कों में उनका अंतिम दर्शन यात्रा का कार्यक्रम हुआ तब ऐसा कोई नहीं होगा, जिनके आंखों से अश्रुधारा न बही हो। आदमी जब रहता है, तब उसका मूल्यांकन कम होता है, लेकिन जाने के बाद पता लगता है कि उनका व्यक्तित्व कितना विराट है, यह हम सब लोगों ने देखा है। निश्चित रूप से इस देश के लिए एक बड़ी क्षति है और हम सब के लिए बड़ी क्षति है। मैं इन सभी दिवंगत आत्माओं को नमन करता हूं और भगवान से यही प्रार्थना करूंगा कि उनको अपने चरणों स्थान दें और उनके परिवारों को असहनीय दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। ओम शांति।

श्री मोहन मरकाम (कोण्डागांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विधानसभा के पूर्व सदस्य और लोक सभा के पूर्व सदस्य जो हमारे बीच नहीं रहे, आज हम उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। स्व. देवव्रत सिंह जी मृदुभाषी, मिलनसार थे, चाहे खास हो या आम हो वे सभी के साथ समान व्यवहार करने वाले लोकप्रिय जनप्रतिनिधि थे। वे इस पंचम विधानसभा के सदस्य भी रहे हैं, उनका जाना हम सबके लिए और इस प्रदेश के लिए अपूरणीय क्षति है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, 14वीं लोकसभा में राजनांदगांव संसदीय क्षेत्र से 2007 में सदस्य रहे। मध्यप्रदेश शासनकाल में भी 1995-1998 तक विधानसभा के सदस्य रहे। छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद संगठन में भी युवक कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रहे हैं। वे युवाओं के बीच लोकप्रिय रहे हैं और उनमें संगठन की क्षमता थी। युवाओं को जोड़ने के लिए उनके साथ एक बहुत बड़ी टीम रहती थी, जो हमेशा उनके साथ चलती थी। एक राज परिवार में जन्म लेने के बाद भी उनका व्यक्तित्व बहुत ही सरल और सौम्य था। आसंदी में सभापति के रूप में बैठकर जिस ढंग से सभा का संचालन करते थे, सचमुच में उनकी जानकारी और उनका व्यक्तित्व बड़ा अच्छा था। उनका जाना कहीं न कहीं हम सबके लिए बहुत अपूरणीय क्षति है। माननीय अध्यक्ष महोदय, राजनांदगांव, कवर्धा और खैरागढ़ क्षेत्र में उनका बहुत ज्यादा प्रभाव रहा है। वे एक राजमहल को छोड़कर एक गांव से खेती-किसानी के साथ-साथ अन्य कार्यों में संलग्न रहते थे। उनका विकास के प्रति नजरिया अलग था और क्षेत्र की जनता के प्रति समर्पण भाव

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के साथ लोगों की सेवा करते थे। उनका कम उम्र में जाना इस प्रदेश के लिए अपूरणीय क्षति है। वे पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी जी के करीबियों में देवव्रत जी की गिनती होती थी। आदरणीय सोनिया गांधी जी से मेरे पास भी फोन आया था कि आखिर उनकी मृत्यु कैसे हुई ? उनके बारे में हालचाल जानना चाहा था तो हमने बताया कि ऐसी-ऐसी बात थी और हमारे दल में नहीं थे । ऐन वख्त में दूसरे दल के हुये, हमने विस्तार से उनको जानकारी दी थी । माननीय अध्यक्ष जी, कहीं न कहीं वे सभी दलों में लोकप्रिय थे ।

माननीय अध्यक्ष जी, युद्धवीर सिंह जूदेव जी एक युवा विधायक थे । उनका 39 साल में जाना इस प्रदेश के लिए बहुत ही अपूरणीय क्षति है । 1 मार्च 1982 को उनका जन्म हुआ था और 20 सितम्बर 2021 को गंभीर बीमारी के कारण उनकी मौत हुई । जो ऑपरेशन होना था, वह समय पर नहीं हो पाया । वे अपने बातों को बेबाकी से रख सकते थे । पार्टी लाईन से हटकर भी कभी-कभी अपनी बात रखते थे । हमारे मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल साहब की भी कई बार उन्होंने तारीफ की थी । पार्टी लाईन से हटकर भी अगर काम अच्छा होता है तो उस काम की तारीफ करते थे । उसमें एक बड़ी सोच थी । मगर उनका भी जाना एक अपूरणीय क्षति है । राज परिवार में जन्म लेने के कारण वह बचपन से ही सियासी माहौल में पले-बढ़े और अपना लाईन खुद तय करते थे । माननीय अध्यक्ष जी, उनका भी जाना हमारे छत्तीसगढ़ के लिए बहुत ही अपूरणीय क्षति है ।

माननीय अध्यक्ष जी, गोविंद प्रसाद अनुरागी, पूर्व सांसद, बिलासपुर लोकसभा के सांसद भी रहे । उनके परिवार में जाने का मुझे अवसर मिला । वे अनुसूचित जाति वर्ग के उत्थान के साथ-साथ बिलासपुर संभाग में कृषि का रकबा कैसे बढ़े, सिंचाई साधन कैसे बढ़े, उसके लिये लगातार प्रयास करते रहे, पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय इंदिरा गांधी जी से भी मिलकर अपनी बात रखते थे और लम्बी बीमारी के बाद उनकी मौत हो गई ।

माननीय अध्यक्ष जी, पूर्व मंत्री राजिन्दर पाल सिंह भाटिया जी, जो खुज्जी के विधायक भी रहे हैं, छत्तीसगढ़ शासन में मंत्री भी रहे हैं, वे भी बहुत ही मिलनसार, मृदुभाषी थे, उनका भी जाना हमारे छत्तीसगढ़ प्रदेश के लिए अपूरणीय क्षति है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मनुराम कच्छ जी, जो केशलूर विधान सभा के सदस्य रहे हैं, जो अभी परिसीमन में चित्रकूट विधान सभा हुआ है । वे एक साधारण परिवार से जन्म लेकर हमेशा क्षेत्र के विकास के लिए, बस्तर के विकास के लिए, बड़े-बड़े सपने देखते थे, हमेंशा पार्टी हित में, पार्टी लाईन में काम करते थे, जब भी संगठन की गतिविधियां होती थी, उसमें भाग लेते थे ।

माननीय अध्यक्ष जी, श्री मूलचंद खण्डेलवाल, पूर्व राज्य मंत्री अविभाजित मध्यप्रदेश शासन और उसके साथ-साथ 8 दिसम्बर 1921 को वायुसेना के हेलिकाफ्टर में दिवंगत सी.डी.एस. जनरल बिपिन रावत जी, उनकी पत्नी श्रीमती मधुलिका रावत जी, कर्नल हरजिंदर सिंह जी, ब्रिगेडियर श्री

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

एल.एस.लिद्दर जी, लांस नायक विवेक सिंह जी, लांस नायक साई तेजा जी, नायक गुरूसेवक सिंह जी, नायक जितेन्द्र कुमार जी, सी.डी.आर. पी.एस.चौहान जी, जे.डब्लू.ओ. राणा प्रताप दास जी, कुलदीप सिंह जी, सतपाल जी, प्रदीप सिंह जी के आकस्मिक निधन पर मैं गहरा शोक व्यक्त करता हूँ और सभी मृतात्माओं को शत-शत नमन करता हूँ । अध्यक्ष जी, सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये मैं अपनी बातों को विराम देता हूँ । धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- डॉ. (श्रीमती) रेणू जोगी ।

डॉ. (श्रीमती) रेणू जोगी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत दु:ख के साथ मैं श्री देवव्रत सिंह, सदस्य छत्तीसगढ़ विधान सभा, जो मेरे करीब ही बैठते थे, उनका निधन होना, मेरे लिये व्यक्तिगत खेद की बात है । वह बहुत ही अच्छे और मृदुभाषी और लोक सभा में भी वह बताते थे कि उनको उत्कृष्ट विधायक का पुरस्कार मिला है, वहां भी उन्हें पुरस्कार मिला था । अच्छे वक्ता थे । श्री गोदिल प्रसाद अनुरागी, पूर्व सांसद, लोक सभा, मेरे विधान सभा रतनपुर के निवासी थे । कई बार उनसे मुलाकात होती थी और हमेशा उनकी बातें प्रेरणा ही देती थी वह कम से कम 5-7 बार लोकसभा सांसद, विधायक के पद पर रहें। श्री युद्धवीर सिंह जूदेव जी पूर्व संसदीय सचिव छत्तीसगढ़ शासन, उनसे भी मेरा व्यक्तिगत परिचय था। जब श्री जोगी रायगढ़ से लोकसभा का चुनाव लड़े थे तो अकसर उनके घर जाना होता था, बाद में और भी अच्छे पारिवारिक संबंध थे। श्री रजिन्दर पाल भाटिया, पूर्व राज्य मंत्री छत्तीसगढ़ शासन के साथ भी इस सदन में बैठने का अवसर मिला, उनकी भी कमी खल रही है और उनको भी मैं अपनी ओर से श्रद्धांजलि देती हूं। श्री मूलचंद खण्डेलवाल, पूर्व राज्यमंत्री अविभाजित मध्यप्रदेश शासन, उनसे भी संयोग से ऐसा परिचय हुआ कि मैंने उनके खिलाफ दूसरा चुनाव लड़ा था और उनके घर भी जाते थे और उनके घर में हमेशा शादियाँ, सांई मंगलम करके उनका घर था, तो मुलाकात होती रहती थी, अच्छे संबंध थे। श्री मनुराम कच्छ, पूर्व सदस्य, अविभाजित मध्यप्रदेश विधानसभा, को भी मैं अपनी हृदय से श्रद्धांजलि देती हूं और जो अभी हाल में 8 दिसंबर 2021 को वायुसेना के हेलीकाप्टर की दुर्घटना में श्री विपिन रावत और अन्य दिवंगतों को अपनी श्रद्धांजलि देती हूं। संयोग से उनकी पत्नी शहडोल जिले की थी, श्री मृघेन्द्र सिंह की बेटी थी और हम लोग वहां दो साल रहे। उनसे भी बहुत अच्छे व्यक्तिगत संबंध थे। परमेश्वर, ईश्वर पिता उनकी आत्मा को शांति दें यही मेरी भगवान से प्रार्थना है और परिवार को इस दुख को सहने की शक्ति दें।

अध्यक्ष महोदय :- श्री केशव चंद्रा जी।

श्री केशव चंद्रा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, विधानसभा और लोकसभा के सदस्य रहे 6 नेता मन ला हमन खोये हन, जेकर आज श्रद्धांजलि छत्तीसगढ़ विधानसभा में देथन। स्वर्गीय श्री देवव्रत सिंह जी पिछले सत्र तक हमर साथ मा यही सदन में बैठे हे। अउ आज मोला जहां कुर्सी आबंटित हए हे, उही कुर्सी मा ओ बैठे हें। बहुत ही मिलनसार और जानकार रहिन। अपन बात ला विधानसभा मा बहुत ही

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बेबाकी के साथ रखै। निश्चित रूप से ओकर जाना यह पंचम विधानसभा के जो बचे हुए समय हे, ये विधानसभा मा हमन ला ओकर कमी हा खलही। स्वर्गीय युद्धवीर सिंह जूदेव जी, बहुत कम उम्र मा हमर बीच ला चले गेन। ओ भी जशपुर राज परिवार से संबंधित रहेन। लेकिन एक राज परिवार से संबंधित होये के बाद जो ओकर सरलता और सहजता रहिस हवे ओकर जो लोकप्रियता रहिस हवे वह निश्चित रूप से सब ला प्रभावित करे, ओकर भी कमी हमन ला खलत हवै। एकर साथ ही साथ लोकसभा के सांसद रहे स्वर्गीय श्री गोंदिल प्रसाद अनुरागी जी, पूर्व मंत्री रहे श्री रजिन्दर पाल सिंह जी और जब हमन बिलासपुर में पढ़त रहन ता स्वर्गीय मूलचंद खण्डेलवाल जी उस समय भारतीय जनता पार्टी के शासन काल में मंत्री रहिन हे। ओकर जो बिलासपुर मा जो लोकप्रियता ला देखेन हन तो स्वर्गीय मूलचंद खण्डेलवाल जी, ये विधानसभा के सदस्य, स्वर्गीय मनुराम कच्छ जी और अभी एक जो दुखद घटना हुईस हे, जे मा देश के प्रथम सी.डी.एस. श्री विपिन रावत जी अउ ओकर साथ मा अउ 12 अन्य मन ला हमन खोये हन, निश्चित रूप से कमी हन बने रही राजनीति के क्षेत्र मा, समाज के क्षेत्र मा, देश के सेवा के क्षेत्र मा ऐ मन के जो महत्वपूर्ण भूमिका रहिस हवै, वह हमेशा हमन याद करबो, ओकर से हमन प्रेरणा लेबो। अउ मैं अपन दल के तरफ से, ये मन सब ला शत्-शत् नमन करते हुये श्रद्धा सुमन अर्पित करत हव, धन्यवाद।

श्री शैलेश पांडे (बिलासपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, वैसे तो जो इस संसार में आता है उसे एक न एक दिन जाना ही होता है, लेकिन श्री देवव्रत सिंह जी का जाना एक अकल्पनीय, अविश्वसनीय और अप्रत्याशित घटना जैसा था। जब जानकारी मिली तब मेरे ख्याल से दीपावली का दिन या आगे-पीछे एकाध दिन रहा है। मुझे अत्यन्त ही दु:ख हुआ। मेरे जैसे या हमारे जैसे जो नये विधायक हैं। वह उन्हें एक रोल मॉडल की तरह देखते थे। जिस प्रकार से वह इतने बड़े राज परिवार से आये थे, उसके बावजूद भी वह इतने धरातल पर रहते थे। उनका ज्ञान और जो बात करने की सौम्यता थी। वह सभापति तालिका में भी बैठते थे और हम लोग उनके सामने बहुत सारी बातें रखते थे। वह एक-एक शब्द, एक-एक वाक्य बहुत ध्यान से सुनते थे। वह एक-एक विधायक, वक्ता पर इतना अटेंशन देते थे। वास्तव में उनका जाना हम सभी के लिए, छत्तीसगढ़ के लिए बहुत ही अपूरणीय क्षति है और हम सभी ने एक युवा नेता खोया है। मैं बहुत ही गहरा दु:ख व्यक्त करता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री गोंदिल प्रसाद अनुरागी जी, चूंकि बिलासपुर से सांसद रहे और हमारे जिले के ही हैं। वह बहुत ही समय से बीमार चल रहे थे। मैं आपका, माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय स्वास्थ्य मंत्री जी का आभार व्यक्त करूंगा कि उनकी बीमारी के समय बहुत सहायता की गई, उनको हर प्रकार से सुविधा जो हो सकती थी, वह लम्बी बीमारी से संघर्ष कर रहे थे। उनके परिवार को कभी रायपुर, बिलासपुर, रतनपुर जाना पड़ता था। उनके परिवार के द्वारा बड़ा ही प्रयास किया गया। आप तो स्वयं भी उनके परिवार में श्रद्धासुमन अर्पित करने

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गये थे। उनका जाना भी बिलासपुर के लिए और हम सभी के लिए भी दुखद रहा है। मैं उनके लिए भी अत्यन्त दु:ख प्रकट करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री मूलचंद खण्डेलवाल जी बिलासपुर के विधायक रहे। मुझे उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। वह इतने वरिष्ठ थे, कई बार तो बैठ भी नहीं पाते थे, लेकिन मंच पर आते थे और अपने पास बुला लेते थे, आओ, आकर बैठो । मुझसे बाते करते थे कि क्या, कैसा चल रहा है, क्या हो रहा है ? वह मुझे घर बुलाते थे और घर बुलाकर भी बड़ा स्नेह और मार्गदर्शन देते थे। आदरणीय हमारे नेता प्रतिपक्ष जी ने बिलासपुर के गोल बाजार की बात बतायी। वास्तव में बिलासपुर के जितने भी व्यावसायिक संगठन थे, व्यवसायी लोग थे, वह सभी उनको बहुत मानते थे। उनकी छवी एक बेबाक नेता के जैसे थी और उनका जाना भी अत्यन्त दु:खद है और विशेषकर हम सभी बिलासपुर के लोगों को बहुत ही नुकसान हुआ है। मैं श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया जी, श्री युद्धवीर सिंह जूदेव जी, श्री मनुराम कच्छ जी उनके भी निधन पर गहरा दु:ख व्यक्त करता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, वायुसेना के हेलीकॉप्टर की जो दुर्घटना हुई है, हमारे जो पहले सी.डी.एस. विपिन रावत थे, उनका परिवार और हमारे सभी सेना के अधिकारियों के निधन पर दु:ख व्यक्त करता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत आभार।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अपनी भावनाएं कहने के साथ-साथ, व्यक्त करने के साथ-साथ, माननीय धर्मजीत सिंह जी अस्वस्थ हैं। उन्होंने अभी फोन किया था कि मेरी ओर से दो शब्द श्री देवव्रत सिंह जी को समर्पित कीजिएगा। देवव्रत सिंह जी जितनी बार विधायक थे, जब पहली बार मध्यप्रदेश में उप चुनाव में जीते, उसको छोड़कर जितनी बार विधान सभा में निर्वाचित हुए, हम लोग साथ-साथ थे। राजनीतिक दल से समद्धता अपनी जगह है, दृष्टिकोण होना अपनी जगह है। पढ़ने-लिखने वाले, बहुत सारी कठिनाईयों को झेला लेकिन चेहरे पर हमेशा एक स्मित मुस्कान रहती थी। उसके एक संकल्प से पहली बार प्रदेश को ज्ञात हुआ कि छत्तीसगढ़ का कुछ एरिया नर्मदा कछार में भी आता है। नर्मदा के पानी पर भी हमारा अधिकार है। इस पर छत्तीसगढ़ को सोचना चाहिए और करना चाहिए। मैंने उसे शासकीय संकल्प का उत्तर दिया था। ऐसे कई विषय होते थे जिसमें उनकी विद्वता दिखती थी।

अध्यक्ष महोदय, श्री गोंदिल प्रसाद अनुरागी जी बिलासपुर संभाग के राजनीति के एक बड़े नाम थे, जनसेवा के पर्याय थे।

अध्यक्ष महोदय, श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया जी कि जिस तरह से मृत्यु हुई, सहज, सहसा, किसी को हमको भरोसा नहीं हुआ कि इस तरह से वे मृत्यु को वरण करेंगे। बहुत ही अत्यधिक दुखद था। ऐसे समय में उनका उल्लेख करना भी अच्छा नहीं है लेकिन अत्यधिक कष्टमय जीवन के साथ उन्होंने मृत्यु को स्वत: वरण कर लिया। मैं उनके परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, श्री युद्धवीर सिंह जूदेव, छत्तीसगढ़ के एक प्रतिष्ठित परिवार में जन्म हुआ जिनका परिवार ही आपकी तरह कहें, यहां पर बैठे बहुत से सदस्य हैं, श्री रविन्द्र चौबे जी हैं, चाहे वे आप हों, इधर बैठे मुख्यमंत्री जी हों, उनके दादा, पर दादा से लेकर अब तक एक लंबा इतिहास जनसेवा का रहा है। इनकी मृत्यु की जब खबर आई तो हम लोगों ने प्रेस से लेकर सब जगह तसदीक किया कि यह सच है कि गलत है। मृत्यु के दो तीन पहले एक कार्यक्रम में उनसे मुलाकात हुई थी। मैं और शिवरतन जी कुछ दिन पहले मूलचंद खण्डेलवाल जी के यहां बैठने गये थे। जिस बेबाकी से जिस तरीके से उनकी राजनीतिक शैली थी और जिस बेबाकी से बातचीत, प्रशासन, राजनीति विरोध के स्वर थे, अब वह शैली लुप्त हो रही है या लुप्त हो गई, यह मान लें।

अध्यक्ष महोदय, श्री मनुराम कच्छ जी से मेरी मुलाकात नहीं हुई थी पर केशलूर विधानसभा के विधायक थे, मैं उनके प्रति विनम्र श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूं।

छत्तीसगढ़ विधानसभा की बड़ी महान परंपरा रही है। देश की विभिन्न घटनाओं पर भी हम अलग-अलग विषयों पर विचार व्यक्त करते रहें, सहमति व्यक्त करते रहे हैं, असहमतियां थी तो हमने असहमतियां भी व्यक्त की, पर छत्तीसगढ़ विधानसभा में यह परंपरा बहुत मजबूत रही। देश के प्रथम जनरल सी.डी.एस. और उनके साथ 13 लोग, उनको मिलाकर अन्य 12 लोग कह लें। जिस तरह का योगदान दे रहे थे, देश की सभी सरकारों ने यह सोचा था कि हम भी चीन या अमेरिका की तरह कमांड बनायेंगे। किन्हीं भी कारणों से वह निर्णय नहीं हो पा रहा था, निर्णय हुआ, सुरक्षा विशेषज्ञों ने यह माना कि देश के लिए बहुत जरूरी था। इससे पहले भी विभिन्न सरकारों ने भी इसको सोचा था। एक बड़ा काम देशसेवा के लिए देश की रक्षा के लिए वे कर रहे थे जिसकी शुरूआत इस नाम से हुई। एक गांव से निकलकर देश के सर्वोच्च पद पर देश के पहले सी.डी.एस. बने और जिन मृत्युओं का मैंने उल्लेख किया, इनकी भी मृत्यु असामयिक थी। माननीय मुख्यमंत्री जी, पूरा छत्तीसगढ़ आपके माध्यम से, विभिन्न वक्ताओं ने जो कही कि दुख की घड़ी में और देश की सुरक्षा व्यवस्था में जो भी उनके जाने से रिक्तता आई है, जो योजनाएं आगे पीछे होंगी, छत्तीसगढ़ मजबूती के साथ खड़ा है। छत्तीसगढ़ शोक व्यक्त भी करता है। चूंकि धर्मजीत भाई ने अपनी तरफ से भावनाएं व्यक्त करने के लिये कहा था । माननीय मुख्यमंत्री जी सदन के नेता, विपक्ष के नेता इस बात से अवगत हैं कि मेरे समीप बैठने वाले ही मेरे साथी धर्मजीत सिंह जी अस्वस्थ हैं तो मैं उनके स्वास्थ्य लाभ की भी कामना करता हूं । माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया इसके लिये आपको धन्यवाद देता हूं और मैं सभी दिवंगतों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री प्रमोद कुमार शर्मा (बलौदाबाजार) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम बड़े ही दुखी मन से श्रद्धांजलि देने के लिये यहां खड़े हुए हैं । माननीय देवव्रत सिंह जी के इस तरह जाने से मैं समझता हूं

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कि पूरा छत्तीसगढ़ स्तब्ध रह गया । लक्ष्मी पूजा के दिन अचानक माननीय देवव्रत सिंह जी हम सभी को छोड़कर चले गए ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय देवव्रत सिंह जी के साथ में हम लोग दिल्ली में कुछ दिन पहले ही चूंकि देवव्रत सिंह जी ने अपना संपूर्ण चेकअप कराया था । उसमें सारी रिपोर्ट नॉर्मल आयी थी और वे इस प्रकार हमें अचानक छोड़कर चले गये । एक ऐसे नेता, एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी जो दोनों दल यानी चाहे वह कोई भी दल का हो, चाहे कोई भी अधिकारी हो, उनके सभी से अच्छे संबंध थे, यह बात उनसे देखने को मिली । माननीय देवव्रत सिंह जी के सभी से संबंध यानी चाहे वह कोई भी नेता हो, वे सभी से अच्छे से मिलते थे और सभी से बहुत ही अच्छे से बात करते थे । उनके मार्गदर्शन से माननीय अजीत जोगी जी के जाने के बाद उनके साथ सदैव काम करने का मुझे मौका मिला और एक मार्गदर्शक, एक बहुत अच्छा नेता, पूरे छत्तीसगढ़ ने तो शायद अपना नेता खोया होगा लेकिन मेरे लिये तो एक बडे भाई, एक दोस्त और कहा जाये तो राजनीति में एक गॉडफादर थे । उनके जाने से मुझे बहुत ही दुख है और मुझे असहाय जैसा महसूस होता है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय देवव्रत सिंह जी के लिये ईश्वर से कामना करता हूं कि ईश्वर उनको अपने चरणों में स्थान दे और भगवान उनकी आत्मा को शांति दे ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री गोंदिल प्रसाद अनुरागी जी, श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया जी, श्री युद्धवीर सिंह जूदेव जी, श्री मूलचंद खण्डेलवाल जी, श्री मनुराम कच्छ जी और दिनांक 8 दिसम्बर को वायुसेना में दुर्घटना हुए सभी शहीदों को मैं श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं । मैं अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से सभी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

श्री अरूण वोरा (दुर्ग शहर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज पूरा सदन व्यथित है । हमने अपने सदस्यों को खोया है । हम सभी इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं कि मनुष्य जीवन दुर्लभ है और हमारे जीवन की सार्थकता भी इसी बात में है कि हम लोग एक-दूसरे के काम आयें । कभी भी हमारे द्वारा कोई ऐसा कार्य न हो जिससे किसी की भावनाओं को ठेस या दुख पहुंचता हो । ये जो माननीय सदस्य हमसे बिछड़े हैं वे इन्हीं भावनाओं से ओतप्रोत थे । माननीय देवव्रत सिंह जी के साथ मुझे मध्यप्रदेश की विधानसभा में कार्य करने का अवसर मिला । वे बहुत ही सज्जन, सरल और सौम्य युवा थे । अभी विधानसभा के बजट सत्र के दौरान उन्हें कोरोना हुआ और हम लोग दोनों लगभग आधे घंटे तक लॉबी में बैठे हुए थे, बातचीत कर रहे थे और जब हम लोग अपने-अपने घर पहुंचे तो पता चला कि देवव्रत सिंह जी को भी कोरोना हुआ और मुझे भी कोरोना हुआ और हम लोगों ने आपस में बातचीत की कि अभी तो हम लोग ठीक-ठाक थे, हम लोगों को कैसे कोरोना हो गया ? तो उन्होंने कहा कि मैं एक प्राईवेट हॉस्पिटल में भर्ती हूं और मैंने कहा कि मैं एम्स हॉस्पिटल में दाखिल हुआ हूं । लगभग 5 दिनों तक हम लोग हॉस्पिटल में रहे, बराबर एक-दूसरे का हालचाल जानते रहे । हम लोग स्वस्थ हुए, कोरोना

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

से बाहर आ गए लेकिन जैसा कि अभी माननीय सदस्य ने कहा कि दीपावली के दिन अचानक देवव्रत सिंह जी हमको छोड़कर चले जायेंगे इसकी कल्पना हम लोगों ने नहीं की थी, हम लोगों की बराबर बातचीत होती रहती थी, बहुत अच्छे युवा थे । उनका जाना निश्चित रूप से राजनीतिक क्षेत्र में एक बहुत बड़ी क्षति है ।

श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया के साथ भी मुझे मध्यप्रदेश की विधानसभा में कार्य करने का अवसर मिला । बहुत ही हंसमुख, मिलनसार और वे अपने कार्य के प्रति बहुत जिम्मेदार व्यक्तित्व के धनी थे, उनका निधन भी हम सभी के लिये अपूरणीय क्षति है । श्री युद्धवीर सिंह जी के साथ पिछली विधानसभा में भी हम लोग सदस्य थे, मैं समझता हूं कि वे यहां जहां पर बैठते थे, वहां मुझे भी अभी बैठने का अवसर मिला है और वे बहुत ही सज्जनता से पेश आते थे । उन्होंने बहुत अच्छे युवा के रूप में अपनी छाप बनायी थी।

समय :

12.00 बजे

श्री मूलचंद खण्डेलवाल जी को मैं मध्यप्रदेश विधान सभा के समय से जानता हूं। वे बहुत बेबाक और अच्छी बातें सदन में रखा करते थे।

श्री मनुराम कच्छ के साथ भी हम लोग विधान सभा में सदस्य रहे।

श्री गोदिल प्रसाद अनुरागी जी बिलासपुर से पूर्व सांसद रहे। उनका निधन भी राजनीति के क्षेत्र में अपूरणीय क्षति है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, राजनीति व जनहित में इन सदस्यों ने जो सेवाएं दी हैं, उन्हें कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। यह अपूरणीय क्षति है, जिसकी पूर्ति मैं नहीं समझता कि निकट भविष्य में की जा सकेगी। सदन के अंदर और सदन के बाहर इन सदस्यों ने जो अपनी पहचान बनायी है, उसे आने वाले लंबे समय तक लोग विस्मृत नहीं कर पायेंगे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी 08 दिसंबर को जो घटना हुई, जिसमें हमारे तीनों सेना के प्रमुख श्री विपिन रावत जी और उनकी धर्मपत्नी एवं उनके साथ 11 सैन्य अधिकारियों की जो दुखद मृत्यु हुई है, उससे भी देश को एक बड़ा आघात पहुंचा है। मैं उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- डॉ. रमन सिंह जी।

डॉ. रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ की विधान सभा में हम सब दुखी मन से हमारे सम्माननीय सदस्यों को जोकि हमारे साथ थे और जो भूतपूर्व सदस्य हैं, को याद कर रहे हैं। आज एक अपार संभावनाओं से भरा हुआ युवा, देवव्रत जी, जिसके अंदर ऊर्जा भी थी और जो असमय हम सबको छोड़कर चले गये, मुझे लगता है कि उन्होंने 4 बार विधान सभा में न केवल अपनी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सार्थकता सिद्ध की, बल्कि विधान सभा की सारी की सारी प्रक्रिया में पूरे समय हिस्सा लेते रहे। जब वे सभापति तालिका में बैठकर यहां का संचालन करते थे तो उनकी गंभीरता का अहसास हमें होता था कि वे कितनी ही सक्रियता के साथ इस कुर्सी को सम्मानीत करते रहे। लोकसभा में सांसद के रूप में भी उतने ही सक्रिय रहे। दीपावली के दिन उनका जाना हम सबके लिए, पूरे विधान सभा के लिए, छत्तीसगढ़ के लिए बहुत ही दुखद है। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

सांसद और पूर्व विधायक गोदिल प्रसाद अनुरागी जी एक सक्रिय सांसद के रूप में, एक विधायक के रूप में अपने क्षेत्र की सेवा करते रहे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, पूर्व मंत्री स्व. रजिन्दर पाल सिंह भाटिया जी के साथ हमें बहुत लंबे समय तक राजनीति में काम करने का अवसर मिला। युवा मोर्चा की राजनीति से रजिन्दर पाल सिंह भाटिया और मैं एक साथ उस क्षेत्र में शुरूआत किये और 3 बार विधायक के नाते, मंत्री के नाते उन्होंने न केवल अपनी सक्रियता दिखायी, बल्कि विधान सभा में प्रश्न के माध्यम से जितने अच्छे तरीके से अपना प्रश्न रखते थे और जितना मेहनत करते थे, विधान सभा के गांव-गांव तक उनकी लोकप्रियता थी। उनकी अंतिम यात्रा में जब मैं शामिल हुआ तो लगा कि इस व्यक्ति के साथ समाज के सभी वर्ग जुड़े हैं। मैं उनके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

स्व. युद्धवीर सिंह जूदेव श्री दिलीप सिंह जूदेव जी की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने 2 बार विधान सभा में विधायक के नाते, संसदीय सचिव के नाते और न केवल राजनीति के क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्रों में भी जिस परंपरा को दिलीप सिंह जूदेव जी ने आगे बढ़ाया था और जो धर्मांतरित लोग हैं, उनकी घर वापसी का अभियान में भी बहुत ही सक्रियता के साथ युद्धवीर हमेशा भाग लेते रहे और आज उनका जाना निश्चित रूप से दुखद है।

मैं वर्ष 1990 में पहली बार विधान सभा में पहुंचा और वर्ष 1990 में भी पूर्व मंत्री स्व. श्री मूलचंद खण्डेलवाल भी पहुंचे और मंत्री के रूप में उन्होंने अपनी सक्रिय भूमिका निभायी। वे बहुत ही सहज और तरीके सरल से लोगों से मिलने का काम करते रहे और अपने बिलासपुर ही नहीं, संयुक्त मध्यप्रदेश में उनकी लोकप्रियता थी। उन्होंने संगठन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

स्व. मनुराम कच्छ की विधायक के नाते उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। मैं उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, 08 दिसंबर, 2021 को वायु सेना के हेलीकॉप्टर में दुर्घटना में दिवंगत चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल विपिन रावत जी, उनकी पत्नी मधुलिका रावत सहित 13 लोगों का हेलीकॉप्टर दुर्घटना में निधन हुआ। उन सभी के प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। आपने बोलने का अवसर दिया। धन्यवाद।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वन मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम सब यहां दिवंगतों के सम्मान में उनको याद करने के लिए, उनको श्रद्धांजलि देने के लिए अपने-अपने ढंग से अपनी-अपनी बात रख रहे हैं । श्री देवव्रत सिंह जी से बहुत ही क़रीबी संबंध थे और उनके परिवार में भी आना जाना था । मैं जब पहली बार वीरेन्द्र नगर विधान सभा क्षेत्र से विधायक बना तो वह सीट उनकी पारिवारिक सीट मानी जाती थी, उनकी दादी वहां से चुनाव लड़ती थीं । उनके चाचा स्वर्गीय शिवेन्द्र बहादुर सिंह जी ने पहली बार मुझे वहां से टिकिट दिलवायी और मैं वहां से निर्वाचित हुआ, उसके बाद लगातार विधायक बना । देवव्रत जी अलग-अलग कामों को लेकर आते थे तो पूरे सम्मान के साथ हम लोग उनका काम भी करते थे । उनका व्यवहार बहुत अच्छा था । मैं अपनी ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । साथ ही साथ श्री गोदिल प्रसाद अनुरागी जी, श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया जी, श्री युद्धवीर सिंह जूदेव जी, श्री मूलचंद खंडेलवाल जी, श्री मनुराम कच्छ जी एवं 8 दिसम्बर, 2021 को वायुसेना के हेलीकॉप्टर दुर्घटना में दिवंगत जनरल विपिन रावत जी के साथ-साथ सारे दिवंगतों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, नमन् करता हूं ।

स्वास्थ्य मंत्री (श्री टी.एस.सिंहदेव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने पिछले विधान सभा सत्र और इस विधान सभा सत्र के बीच छत्तीसगढ़ के 6 जनप्रतिनिधि और देश के सी.डी.एस., उनकी धर्मपत्नी एवं उनके साथियों को खोया। श्री देवव्रत सिंह जी, गोदिल प्रसाद अनुरागी जी, श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया जी, श्री युद्धवीर सिंह जूदेव जी, श्री मूलचंद खंडेलवाल जी, श्री मनुराम कच्छ जी । विदित है कि देवव्रत भाई से हम सबके बहुत ही पारिवारिक संबंध थे, बहुत क़रीबी पारिवारिक संबंध थे । संबंधों के साथ, जब हम लोगों को सार्वजनिक क्षेत्र में साथ काम करने के अवसर मिले तो पिछले लगभग तीन दशकों से साथ में काम करने का मौका मिला, लगातार मिलने जुलने का मौका मिला । जिस रात उनकी मृत्यु हुई, एक संयोग था कि रात 11 बजे उनसे फोन पर बात हुई और उस समय ज़रा भी अहसास नहीं हुआ कि ऐसा कुछ होने जा रहा है । उसी रात लगभग 4 बजे एक फोन आया और उनके साथ जो व्यक्ति थे उन्होंने कहा कि ऐसा-ऐसा हो गया । तो मैंने कहा कि आप कैसी बात कर रहे हैं । अभी भाई से मेरी बात हुई । तो उन्होंने कहा कि मैं उनके साथ ही हूं और ऐसा हो गया है । ऐसी दुखद परिस्थिति में देवव्रत भाई के हम सब से बिछड़ जाने की जानकारी मिली । व्यक्तिगत् बहुत बड़ी क्षति, पारिवारिक बहुत बड़ी क्षति और मैं मानता हूं कि छत्तीसगढ़ के लिए भी एक ऐसे होनहार जनप्रतिनिधि को असमय खो देने की बहुत बड़ी क्षति हुई है । उनकी आत्मा को शांति मिले, उनके परिवार में उन्होंने अन्य के अलवा 2 व्यस्क बच्चों को भी पीछे छोड़ा है । उन सबकी देखभाल, मेरे साथ ही हम सबकी जवाबदारी होगी, मैं ऐसा मानता हूं । जो कुछ हम उस परिवार के लिए कर सकेंगे, वह देवव्रत भाई के साथ हम सबने समय साझा किया, उसके प्रति अपना समर्पण दे सकेंगे ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अनुरागी जी की पुत्री के साथ लगातार सम्पर्क बना रहता था और सम्पर्क बना हुआ है । बहुत दुख हुआ जब हमने उनको एक लम्बी बीमारी के बाद खोया । युद्धवीर भाई पड़ोस के जिले के थे, पारिवारिक संबंधी थे, बहुत कम बोलने वाले लेकिन बहुत बोल्ड व्यक्ति थे। ऐसा कम होता है कि सार्वजनिक तौर पर हम लोग उनको बहुत कम सदन में भी हम लोगों ने देखा है, शायद ही उन्होंने कभी intervention किया हो, कभी भाग लिया हो। लेकिन जो ऊर्जा उनमें थी वह उस बात भी परिलक्षित हुई। हम लोग भी जनप्रतिनिध के रूप में चुनाव लड़ने की बात सोचते हैं, अपने विधानसभा के बाहर लड़ने में बीस बार सोचते हैं और वो जाकर के चन्द्रपुर से चुनाव लड़ सकें, अन्य जगह से चुनाव जड़ सके, दो बार जीत कर आए। यह स्पष्ट इस बात को दिखाता था कि उनका दल, उनका साथ, वहां के नागरिक और प्रदेश के नागरिक कैसे उनको स्वीकार करके अपने जनप्रतिनिधि के रूप में अवसर देना चाहते थे। ऐसे बोल्ड एक युवा को हमने खोया है, जो अपनी बात कहने में हिचकते नहीं थे, उसका गहरा दु:ख है। CDS (Chief of defence staff) श्री बिपिन सिंह रावत जी से तो मेरे संबंध संबंध सीधे नहीं थे, लेकिन जैसा रेणु जी ने बताया मृगेन्द्र सिंह जी जो मध्यप्रदेश विधानसभा के दो बार विधायक भी रहे और कई साथी जो आज यहां सदन में है संभवत: उनको अच्छे से जानते रहे होंगे। मृगेन्द्र सिंह जी की पुत्री इस स्तब्ध करने वाली दुर्घटना में हमारे बीच में नहीं रह सकीं, यह जब जानकारी लगी तो विश्वास नहीं हुआ। Chief of defence staff उनके एक सबसे माडर्न हेलीकॉप्टर में माने जाने वाला वो MI-17 का यान कैसे यह हो सकता है, लेकिन यह हुई दुर्घटना, मुझे अवसर मिला परिवार के साथ जाकर के सांत्वना देने के लिए अपनी ओर से, हम सबकी ओर से और वहां मृगेन्द्र सिंह जी की धर्मपत्नी वे थीं और कैसी पुरानी सारी बातें वे भी स्मरण करती रहीं, याद करती रहीं, कैसे आना-जाना होता था, व्सक्तिगत घर में कैसे आना-जाना होता था। मधुलिका जी भी उस समय बच्ची थी, वे घर आती थी, शहडोल, सुहागपुर हम लोग आते जाते थे, उस समय घर आते-जाते थे। ये सारी बातें हम लोगों ने साथ बैठकर चर्चा की और गहरा दु:ख व्यक्त करना चाहूंगा। ये सभी साथी जो हमसे बिछड़ गये, उनकी आत्माओं की शांति और उनके परिवार को संबल मिले जो उन्हें खो देने के बाद भी उनके विचारों और आदर्शों के आधार पर निरंतर जैसा उन्होंने योगदान दिया, हम सब भी प्रेरित होकर देते रहेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मोहले जी।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जितने दिवंगत आत्मा है उसके निधन के उल्लेख में मैं कहना चाहूंगा। श्री देवव्रत सिंह जी, अपने साथ सांसद थे और सांसद के रूप में हम दोनों ने कार्य किया, ट्रेन में आते-जाते थे, एक अच्छे खुशमिजाजी थे, विनम्र भाव था, लोगों में समानता और उनमें दूरदर्शिता थी, ऐसे नेता को मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। श्री गोंदिल प्रसाद अनुरागी जी, पूर्व सांसद और विधायक थे, अपने साथ चुनाव में पाराजित भी हुए थे और ऐसे में उनके परिवार के साथ एक सामान्य स्थिति हुई कि परिवार में आना-जाना हुआ। वे अपने लड़के के सदृश मुझे मानते थे और पूरे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जिले में अनुसूचित जाति के विकास के लिए मशहूर थे तथा रासलीला करते थे और रासलीला में वे लोक कलाकार के रूप में प्रसिद्ध थे, वे चिकारा बजाते थे और समाज को मोह लेते थे। ऐसे नेता को मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। श्री रजिन्दर पाल सिंह भाटिया जी, पूर्व मंत्री थे। अपने साथ विधानसभा में कार्य करने का अवसर मिला। अपने कार्य में दक्ष रखते थे और उन्होंने समाज के प्रति जागरूकता दिखाई। अनेक बार भी विधायक बने और मंत्री भी बने। मैं उनको श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। श्री युद्धवीर सिंह जूदेव जी, राजघराने के होते हुए भी एक विनम्र और सब में प्रेम_भाव और सबको श्रद्धा से देखते थे, सबको ही एक सत्कार के दृष्टि से जाने जाते थे और उनके मन में किसी प्रकार की अहं नहीं थी। ऐसे भी नेता को मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। श्री मूलचंद खण्डेलवाल जी, हमारे जिले के एक वरिष्ठ नेता थे और पूरे समाज में इनकी ख्याति थी और उनके सामने बौने लगते थे। इन्होंने ही हमें एक राजनीतिक शिक्षा दी जिससे हम आगे बढ़े। मैं खण्डेलवाल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। श्री मनुराम कच्छ को और CDS श्री विपिन सिंह रावत जी और उस दुर्घटना में जितने दिवंगत आत्मा हुए, मैं उन सभी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं, सदन की ओर से शोकाकुल परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं। दिवंगतों के सम्मान में अब सदन दो मिनट का मौन धारण करेगा।

(सदन द्वारा खड़े होकर 2 मिनट का मौन धारण किया गया)

अध्यक्ष महोदय :- दिवंगतों के सम्मान में सदन की कार्यवाही मंगलवार, दिनांक 14 दिसंबर, 2021 को पूर्वाह्न 11:00 बजे तक के लिए स्थगित।

(12 बजकर 17 मिनट पर विधान सभा मंगलवार, दिनांक 14 दिसंबर, 2021 (अग्रहायण 23, शक संवत् 1943) के पूर्वाह्न 11:00 बजे दिन तक के लिए स्थगित हुई.)

चन्द्र शेखर गंगराड़े

रायपुर (छ.ग.) **प्रमुख सचिव**

दिनांक 13 दिसंबर, 2021 **छत्तीसगढ़ विधान सभा**

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं